● **पढ़ो, समझो और लिखो :**

४. बालिका दिवस

(सब बच्चे दूर्वा के घर खेलने के लिए एकत्रित हुए हैं । वहाँ चाची जी और बड़े भैया भी हैं ।)

दूर्वा – सृष्टि, आज तो तुम बहुत बन-ठनकर आई हो ।

सृष्टि – आज तीन जनवरी बालिका दिवस है ना !

प्राची – अरे हाँ ! कल बहन जी ने बताया था कि सावित्रीबाई फुले का जन्मदिन 'बालिका दिवस' के रूप में मनाया जाता है ।

चाची जी – सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम शिक्षिका मानी जाती हैं । अपने पति महात्मा जोतीबा फुले के साथ मिलकर उन्होंने लड़कियों के लिए पुणे में पहली पाठशाला शुरू की थी ।

जिशान – आजकल तो लगभग सभी लड़कियाँ पाठशाला जाती हैं । पढ़ाई-लिखाई और अन्य क्षेत्रों में खूब आगे हैं ।

मंत्र – हाँ-हाँ, आज समाजसेवा, शिक्षा, विज्ञान, संगीत, प्रशासन, शोधकार्य, खेलकूद आदि हर क्षेत्र में लड़कियाँ आगे बढ़ रही हैं ।

सृष्टि – मेरी माँ बताती हैं कि शिक्षा हमें स्वावलंबी और सजग बनाती है ।

भैया – कहा जाता है, एक लड़की शिक्षित होती है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है ।

प्राची – हाँ ! इसलिए हम सबको खूब मन लगाकर पढ़ना चाहिए ।

सभी – खूब पढ़ेंगे-खूब बढ़ेंगे ।

❑ उचित आरोह-अवरोह, उच्चारण के साथ पाठ का वाचन करें । विद्यार्थियों से अनुवाचन कराएँ । मुखर और मौन वाचन हेतु प्रेरित करें । उन्हें अपने पड़ोस के परिवार के सदस्यों की जानकारी देने के लिए कहें । पड़ोसियों के महत्त्व बताएँ ।